समीक्षावाद (Criticism)

Philosophy - Part - I
Paper - II

→ Q. कांट का समीक्षावाद किस प्रकार बुद्धिवाद तथा अनुभववाद के बीच समन्वय स्थापित करता है? विवेचना कीजिए

How does Kant's Criticism reconcile Rationalism and Empiricism?

Ans→ कांट के पूर्व ज्ञानमीमांसा में दो परस्पर - विरोधी सिद्धान्त के रूप में बुद्धिवाद तथा अनुभववाद प्रचलित थे। कांट इन दोनों की त्रुटियों को अस्वीकार कर तथा इनके गुणों को अपनाकर इनमें समन्वय लाने की प्रशंसनीय कार्य किया। कांट के सिद्धान्त 'समीक्षावाद' (Criticism) कहलाता है। इसमें उपर्युक्त दोनों सिद्धान्तों का अपूर्व सामंजस्य दीख पड़ता है। यह बात निम्नलिखित तथ्यों से स्पष्ट हो जाती है।—

① बुद्धिवाद के अनुसार यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति केवल बुद्धि (Reason or intellect) द्वारा संभव है। इसके विपरित अनुभववाद केवल अनुभव या प्रत्यक्ष (experience or perception) को ज्ञान का साधन मानता है। कांट के समीक्षावाद के अनुसार ज्ञान की प्राप्ति अनुभव तथा बुद्धि दोनों के सहयोग से संभव है। ज्ञान की सामग्री अनुभव द्वारा मिलती है। और इसका रूप या आकार बुद्धि की देन है.

अतः अनुभव तथा बुद्धि दोनों ज्ञान के साधन हैं। इनमें से किसी एक की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

② बुद्धिवाद के अनुसार यथार्थ ज्ञान सार्वभौम (universal) तथा अनिवार्य (Necessary) होता है। सभी स्थानों पर सभी कालों में सत्य रहनेवाला ज्ञान ही सार्वभौम कहलाता है अनिवार्य ज्ञान वह है, जिसका विरोधी या अपवाद कभी सत्य न हो। 2+2=4 यथार्थ ज्ञान का सर्वोत्तम उदाहरण है। यह सर्वत्र तथा सभी समय सत्य होता है। इसके विपरित, अनुभववाद के अनुसार यथार्थ ज्ञान केवल नवीन (new or novel) होता है।

Scanned by CamScanner

यहाँ परिवर्तन, संशोधन एवं परिमार्जन की गुंजायश सदा रहती है। ज्ञान की परिभाषा को लेकर इन दोनों सिद्धान्तों के बीच उत्पन्न मतभेद को कांट ने यह कहकर दूर किया है कि यथार्थ ज्ञान सार्वभौम, अनिवार्य तथा नवीन होता है। प्रथम दो गुण बुद्धि की देन हैं तथा अन्तिम गुण अनुभव द्वारा आता है।

(iii) बुद्धिवाद के अनुसार यथार्थ ज्ञान निश्चयात्मक (certain) होता है, इसके विपरित अनुभववाद ज्ञान को केवल संभाव्य (Probable) मानता है। कांट का मत है कि कुछ ज्ञान निश्चयात्मक होते हैं, तो कुछ संभाव्य भी होते हैं।

(iv) बुद्धिवाद के अनुसार यथार्थ ज्ञान को वस्तुवादी (Corresponding of facts) होना आवश्यक नहीं है। परन्तु अनुभववाद के अनुसार यथार्थ ज्ञान सदैव घटनाओं के अनुकूल अर्थात वस्तुसंवादी होता है। कांट के अनुसार अनुभवजन्य ज्ञान वस्तुसंवादी होता है, परन्तु बौद्धिक ज्ञान के लिए वस्तुवादी होना आवश्यक नहीं है।

(v) बुद्धिवाद धारणात्मक विज्ञान (Conceptual Science) को ज्ञान का आदर्श मानता है। गणित इस ज्ञान का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। यहाँ मुख्यतः धारणाओं (Concepts) का अध्ययन किया जाता है। इसके विपरित अनुभववाद वस्तुनिष्ठ या तथ्यात्मक विज्ञान (objective or Conceptual Science) को ज्ञान को आदर्श मानता है। यहाँ यथार्थ घटनाओं का अध्ययन किया जाता है। भौतिकशास्त्र रसायनशास्त्र आदि इस विज्ञान के उदाहरण हैं। कांट इन दोनो प्रकार के विज्ञानो को ज्ञान के आदर्श मानते हैं।

Scanned by CamScanner

(vi) बुद्धिवाद के अनुसार सम्पूर्ण ज्ञान जन्मजात प्रत्ययों (Innate ideas) में निहित है। बुद्धि इन्ही का विश्लेषण एवं विकास करके हमें ज्ञान देती है। इसके विपरित अनुभववाद जन्मजात प्रत्ययों को पूर्णतः अस्वीकार करता है। इसके अनुसार जन्म के समय मानव मन बिल्कुल रिक्त रहता है। सभी प्रत्यय अनुभवजन्य है। इन्ही अनुभव जन्य प्रत्ययो मे संपूर्ण ज्ञान निहित है। कांट का यहाँ कहना है कि कुछ जन्मजात प्रत्यय आवश्य है। इनमें ज्ञान के तत्व विधमान हैं। परन्तु अनुभवजन्य प्रत्यय भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। अतः ज्ञान के निर्माण में अनुभवजन्य प्रत्यय भी कम महत्वपूर्ण नहीं है अतः ज्ञान के निर्माण में अनुभवजन्य प्रत्यय तथा जन्मजात प्रत्यय दोनो महत्वपूर्ण है

(vii) बुद्धिवाद ज्ञान प्राप्ति में मन को सक्रिय (active) बतलाता है। मन के निष्क्रिय रहने पर हमें कोई ज्ञान मिल सकता। इसके विपरित अनुभववाद ज्ञान प्राप्ति मे मन को निष्क्रिय मानता है। कांट का स्पष्ट मत है कि संवेदनो को प्राप्त करने में मन की सक्रियता कोई आवश्यक नहीं परन्तु इनमें अर्थ जोड़कर निर्णय बनाने में मन की संक्रियता आवश्यक है। अतः इनके अनुसार मन अंशतः निष्क्रिय रहता है। तथा अंशतः सक्रिय भी रहता है.

—

Scanned by CamScanner